

19, 5, 4, 17, 20. अर्धाद्यमृशंसे दधात 5, 3, 7. व्युत्पन्नम् 1, 54, 11. तत्रम् 187, 6; वर्षः 7, 68, 6. 24, 8, 25, 3. 6, 35, 4. — 3) *med. an sich nehmen, an sich zur Erscheinung bringen*: विद्या अर्धे अर्धे दधे RV. 2, 8, 5. 1, 85, 2. 8, 28, 5. अर्धे अर्धे देवमर्धं दधानाः 1, 73, 10. दिवे दिवे अर्धे नामा दधाना 123, 4. अर्धे विषीरिधित् सूर्यस्य 9, 71, 9.

— अनु 1) *darauf hinzulegen*: अथान्यान् (तण्डुलान्) कृतास्वाश्रयिषु (स-मित्) अनु दधीरन् LĀTJ. 4, 9, 14. — 2) *veranlassen zu (dat.)*: अनु प्र यज्ञे जन् श्रोत्रा अस्य सत्रा दधिरे अनु वीर्येय RV. 6, 36, 2.

— व्यनु *etwa entfalten*: व्यो न पतान्यनु अर्धे धिरे RV. 1, 166, 10.

— अत्तर 1) *dazwischenlegen, — setzen*: न तूष्णीं चनात्तर्धाय ÇAT. Br. 4, 3, 8, 13. 4. PĀR. GRHJ. 2, 1. पाणिम् KĀTJ. ÇA. 7, 9, 4. 9, 7, 4. उडुम्बरशाखा-मत्तर्धायभिषिञ्चति AIT. Br. 8, 7, 13. ĀÇV. GRHJ. 1, 10, 11. पत्नीमत्तर्धाय *dazwischenstellend* KĀTJ. ÇA. 26, 7, 6. — 2) *abscheiden, absondern; ausschliessen, beseitigen; zudecken, verbergen*: अत्तर्धाय दधता पर्वतेन RV. 10, 13, 4. अत्तर्धायान् डुरितानि विद्या AV. 5, 28, 8. 11, 10, 4. 17, 1, 29. पूर्वान्मित्रैर्नवेतर्धायामत्तर्धायः ÇAT. Br. 2, 2, 8, 13. देवानमुस्तामसात्तर्धायः 11, 5, 5, 1. पत्नीनां किंचिदत्तर्धाय ब्राह्मणेभ्यः शेषं निवेदयेत् ÇĀKṢH. GRHJ. 4, 1. आत्मानं नात्तर्धाय PĀR. GRHJ. 2, 8. अन्तेनात्मानमत्तर्धाय *sich mit Unwahrheit verhüllend* KĀND. UP. 6, 16, 1. (तम्) तणो — अत्तर्धये चोरशैर्यवृष्ट्या MBH. 4, 1683. (रजः) भौममत्तर्धये लोकमावृत्य सवितुः प्र-भाम् R. 5, 73, 63. अत्तर्धाय ततो त्मानम् *sich verbergen, sich unsichtbar machen* MBH. 1, 6713. अत्तर्धायत् BHĠG. P. 3, 2, 11. आत्मानायामत्तर्धाय *verschwinden machen* 6, 9, 33. पितुरत्तर्धये कीर्तिं शोषवत्समाधिभिः so v. a. *verdunkeln* MBH. 1, 3519. mit dem abl. *vorenthalten, entziehen*: पशून्नेव रुद्रदत्तर्धायति ÇAT. Br. 13, 3, 4, 3. *pass. verdeckt —, verhüllt —, unsichtbar werden, verschwinden*: शुभिर्व्यतिसर्पद्विरादित्यो ऽत्तर्धायत MBH. 4, 1042. आत्मान्यत्तर्धये M. 1, 51. अद्भुतं च सर्वमत्तर्धायत SUND. 1, 17. तद्भुतं तत्रैवात्तर्धायत ARĠ. 3, 41. MBH. 1, 3880. 3, 2619. 2632. 4, 213. 5, 7385. R. 1, 2, 41. 13, 17. 2, 41, 9. ते चात्तर्धये नागाः MBH. 1, 5060. KATHS. 10, 13. BHĠG. P. 4, 12, 11. 3, 3, 15. रात्रिरादित्योदये ऽत्तर्धायते NĪR. 12, 11. भ-यमनूनसंज्ञातं तिप्रमत्तर्धायत MBH. 1, 3442. उत्तमत्तर्धये सद्यः DAÇ. 1, 15. इमं वैश्रवणावासं पुण्यम् — कथं भौम गमिष्यामो गतिरत्तर्धायताम् (lies: ऽधीयत) so v. a. *wurde unterbrochen* MBH. 3, 11441. Mit dem abl. *sich vor Jmd verbergen, sich Jmdes Augen entziehen* P. 1, 4, 28. उपा-ध्यायादत्तर्धये Sch. अत्तर्धत्स्व रघुव्याघ्रात् BHATT. 5, 32. 6, 15. 8, 71. auch mit dem gen: तेषामत्तर्धये BHĠG. P. 8, 6, 26. — 3) *in sich aufnehmen*: विश्वमे देवि मामत्तर्धायतुमर्हसि RAGH. 13, 81. *in sich enthalten*: शास्त्रमे-तत् । अत्तर्धायति तत्सर्वमेतदः कथितं मया MBH. 12, 12747. *im Innern, im Herzen zur Erscheinung bringen, zeigen*: सैयात्तर्धायतो तमोविघटना-दानन्दमात्मप्रभम् PRAB 80, 6. — अत्तर्धित *partic. 1; getrennt*: रात्रिभिरत्तर्धितौ ÇAT. Br. 2, 2, 8, 13. 13, 8, 20. अन्तर्धित *durch keinen Zwischenraum u. s. w. getrennt, unmittelbar zusammenhängend. — folgend* ÇAT. Br. 1, 6, 2, 27. 6, 2, 3, 2. प्रज्ञा 5, 3, 5. ज्ञातृप 14, 9, 4, 25. — 2) *bedeckt*: शेषा-नत्तर्धायतां त्वं भूमौ *auf der blossen Erde* R. 2, 9, 18. आसातं नानत्तर्ध-तायाम् (sc. भूमौ) ÇĀKṢH. GRHJ. 4, 12. LĀTJ. 9, 3, 4. अन्तर्धितो नाभिमभि-मृशे GORR. 2, 10, 23. पात्रेषु र्धत्तर्धितेष्वपि आसिच्य *in Gefässe, über welche ein Grasbüschel gehalten wird*, ĀÇV. GRHJ. 4, 7. *verhüllt, verborgen, versteckt, unsichtbar gemacht, verschwinden, unsichtbar* H. 1477. भू-

III. Theil.

तेषु चात्तर्धितः BHĠG. P. 1, 3, 36. पादपात्तर्धित ÇĀK. 9, 18, v. l. मया ते ऽत्तर्धितं रूपम् MBH. 3, 2621. 4, 1684. य उदारो अत्तर्धिताः AV. 11, 9, 16. ÇAT. Br. 13, 8, 8, 1. सिद्धौ भूत्वा पुनर्धायौ पुनश्चात्तर्धितावभौ SUND. 2, 21. MBH. 1, 119. 4710. 3, 2496. 2634. 2699. 4, 450. 5, 7266. R. 3, 13, 17. RAGH. 13, 40. BHĠG. P. 1, 16, 24. Mit einem abl. *verborgen vor, Jmds Blicken entzogen* ÇAT. Br. 1, 9, 4, 24. VOP. 5, 20. — Vgl. अत्तर्धायि fgg. — *caus. verschwinden machen*: इति रूपमत्तर्धायितम् Schol. zu NALOD. 3, 18.

— अप *wegschaffen, wegnehmen*: अग्निर्विश्वान्यपि दुष्कृतान्यनुष्ठान्यारे अमर्धायतु RV. 10, 164, 3. मर्धो हुको अप विश्वान्यु धायि वक्षस्य यत्पतेने पादि शुभः 6, 20, 5. — Vgl. अपधा.

— अपि oder पि (von MANU an häufiger als अपि) 1) *hineinstecken; darreichen, hingeben*: वैश्वानरस्य देष्टव्योऽग्नेरपि दधामि तम् AV. 4, 36, 2. VS. 11, 77. ÇAT. Br. 12, 7, 8, 20. रुद्राय पशूनापिदध्यात् TBR. 1, 1, 5, 9. TS. 5, 2, 3, 3. ज्ञातृयैवास्मा अन्नमपि दधाति 3, 4, 1. स्तनम् ÇAT. Br. 2, 2, 1, 1. मृत्यव आत्मानमपिदधात् 13, 3, 5, 2. ब्रह्म तत्रापापिदध्यात् PĀNĀV. Br. 18, 10, 8. देवा देवेष्वपिदध्यात् क्रतुम् *etwa legen in oder zulegen* RV. 10, 36, 4. क्रव्योऽपि वृत्रायपि धत्स्वामन् *stecke in deinen Mund* 87, 2. — 2) *zu-decken, verstopfen; verschliessen, schliessen, einschliessen; verhüllen, bedecken, verdecken, verbergen*: (किराणाम्) अमर्धना बिलम्प्यधाम् AV. 7, 35, 2. RV. 1, 32, 11. 4, 28, 1. 5. MBH. 1, 5863. किद्रम् AIT. Br. 3, 18. MBH. 1, 8380. धनेनाधर्मलब्धेन यच्छिद्रमपिधीयते 5, 1231. मो अर्धना ऽपि धायि ते AV. 5, 30, 15. TS. 5, 2, 3, 2. तुष्टोऽन्वाधर्पिकितं यदासीत् RV. 10, 129, 8. अश्वभिधान्यपिकितेनात्मना AIT. Br. 6, 35. कर्णा ÇAT. Br. 14, 8, 8, 1. MBH. 3, 1852. MRĀKH. 123, 16. ÇĀK. 67, 13. v. l. MUDRĀN. 24, 5, 25, 8. GLT. 5, 4. कुम्भीम् ÇAT. Br. 2, 5, 8, 16. R. GORR. 1, 15, 16. ब्रह्मणः कोशो ऽसि मेधयापिकितः TAITT. UP. 1, 4, 1. हिरण्यमेन पात्रेण सत्यस्यापिकितं मु-खम् BRH. ĀN. UP. 5, 15 = ĪÇOP. 15. MBH. 2, 2634. हारे ÇAT. Br. 4, 3, 5, 9. 11, 1, 4, 3. KĀTJ. ÇA. 10, 4, 4. MBH. 3, 12089. RAGH. 1, 80. VID. 27, 36. VĪ-JU-P. in Verz. d. Oxf. H. 31, b, ÇI. 29. PRAB. 72, 13. आश्रमम् MBH. 13, 2290. पिकितापणोदया (अयोध्या) R. 2, 48, 29. अपिकितपाणि ÇĀKṢH. GRHJ. 4, 7, 12. गोपान्विलेषु पिकितान् BHĠG. P. 2, 7, 31. पिधङ् पाणिभिर्दशः BHATT. 7, 69. ÇIÇ. 9, 76. एकस्य नयने पिधाय AMAR. 16. वेदीधूमो ऽस्य वा-व्येण पिधे दशौ KATHS. 16, 80. वाव्यापिकितलोचना R. 5, 16, 51. PĀNĀT. 43, 16. वाव्येण पिकितम् (जनम्) R. 2, 45, 12. MBH. 3, 2723. धनेन पिकिताः सर्वा दिशो न प्रतिभाति मे 4, 1453. तेषां बहुवात्सुभं शराणां दिशो ऽथ सर्वाः पिकिता बभूवुः 6, 2582. SŪRJAS. 7, 20. KATHS. 14, 19. RĀGA-TAN. 3, 253. BHĠG. P. 7, 3, 16. H. 1476. (वाणाः) आनडुकेन चर्मणापिकितः *überzogen mit* LĀTJ. 4, 1, 1. प्यधात्कारुभिरिवाम्भः RĪGA-TAN. 4, 508. AK. 2, 3, 8. प्रभावपिकिता *verhüllt, unsichtbar gemacht* VIKR. 72. यथा नागपदे ऽन्यानि पदानि पदगामिनाम् । सर्वाण्येवापिधीयते (एव पि 13, 5580) पद-ज्ञातानि कौञ्जरे ॥ so v. a. *spurlos verschwinden* MBH. 12, 8932. न ते (गुणाः) ऽधुना पिधीयते *werden verhüllt* BHĠG. P. 7, 4, 34. प्रायो मूर्धः प-रिभवविधौ नाभिमानं पिधते ÇĀKṢH. GRHJ. 17. शोकेनापिकितेन्द्रियाम् so v. a. *in ihrer Thätigkeit gehemmt* R. 5, 29, 16. — Vgl. अपिधान. पिधान. अ-पिधि, पिधातव्य. अप्यपिपिकित. — *caus. zudecken —, schliessen lassen*: ज्ञातृपेणापिधाय KAUC. 13, 26, 48. व्रजम् — नेत्रे पिधाप्य BHĠG. P. 2, 7, 29.

— अन्वपि *pass. nach Jmd verhüllt werden, — verschwinden*: तम-न्वपिधीयते लोका भूरादयस्त्रयः BHĠG. P. 3, 11, 28.

37*